

ई-कंटेंट

प्रस्तुतकर्ता- डॉ दीपिका दूबे

सर्टिफिकेट कोर्स (सेमेस्टर 1)

विषय- हिन्दी

कोर्स कोड- A0101012

पाठ्यक्रम का नाम- हिन्दी काव्य

शीर्षक- नाथ साहित्य

नाथ साहित्य हिंदी साहित्य के आदिकाल (10वीं से 13वीं शताब्दी) की एक प्रमुख धार्मिक काव्यधारा है, जो भगवान शिव (आदिनाथ) के उपासक नाथ योगियों द्वारा रची गई थी। नाथ साहित्य का भारतीय और हिंदी साहित्य के इतिहास में एक अत्यंत महत्वपूर्ण और युगांतकारी स्थान है। यह केवल धार्मिक उपदेशों का संकलन नहीं है, बल्कि इसने तत्कालीन समाज की दिशा और दशा को बदलने में एक बड़े आंदोलन की भूमिका निभाई थी। राहुल सांकृत्यायन और आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार, नाथ पंथ वास्तव में सिद्धों की वाममार्गी, भोग-प्रधान और विकृत हो चुकी परंपरा की प्रतिक्रिया में उभरा एक शुद्धतावादी और संयम-प्रधान आंदोलन था।

नाथ साहित्य का परिचय

उत्पत्ति: यह सिद्ध साहित्य की भोग-प्रधान और जटिल 'पंचमकार' साधना पद्धति के विरोध में उभरा था।

क्षेत्र: इसका मुख्य क्षेत्र भारत का पश्चिमोत्तर भाग (विशेषकर पंजाब और राजस्थान) रहा है।

नामकरण: हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इसे 'सिद्ध मत', 'योग मार्ग' या 'अवधूत मत' भी कहा है।

नाथ साहित्य की दार्शनिक विचारधारा

हठयोग और षट्चक्र साधना: नाथ दर्शन में 'ह' का अर्थ सूर्य (पिंगला नाड़ी/प्राण) और 'ठ' का अर्थ चंद्रमा (इड़ा नाड़ी/अपान) है। इन दोनों के योग को हठयोग कहते हैं। योगी अपने शरीर के भीतर छह चक्रों (षट्चक्र) को जाग्रत करते हुए कुंडलिनी शक्ति को रीढ़ की हड्डी के रास्ते ऊपर उठाकर मस्तिष्क में स्थित 'सहस्रार चक्र' तक पहुँचाते हैं।

शून्य समाधि और नाद-बिंदु: जब कुंडलिनी सहस्रार चक्र में पहुँचती है, तो वहाँ शिव और शक्ति का मिलन होता है। इस अवस्था को 'शून्य समाधि' कहा जाता है, जहाँ साधक को अनाहत नाद (एक दिव्य ध्वनि) सुनाई देती है और अमृत रस की वर्षा होती है।

निर्गण ईश्वरवाद: नाथों का ईश्वर अमूर्त और निर्गुण है। इन्होंने सिद्धों के 'शून्य' (जो कि बौद्ध शून्यवाद से प्रेरित था) को 'ईश्वरवादी शून्य' का रूप दिया।

नारी-निषेध और वैराग्य: सिद्ध साहित्य में जहाँ नारी को साधना का माध्यम माना जाता था, वहीं नाथों ने इसका कड़ा विरोध किया। उनका मानना था कि नारी भोग अध्यात्म के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है, इसलिए उन्होंने पूर्ण वैराग्य और ब्रह्मचर्य पर बल दिया।

नाथ साहित्य के स्तंभ: गुरु गोरखनाथ- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है कि— “शंकराचार्य के बाद इतना महिमान्वित और इतना प्रभावशाली व्यक्ति भारतवर्ष में दूसरा नहीं हुआ।” गोरखनाथ को ही नाथ संप्रदाय को एक व्यवस्थित और लोक-कल्याणकारी रूप देने का श्रेय जाता है।

कालक्रम और भाषा : गोरखनाथ के समय को लेकर विद्वानों में मतभेद है (राहुल सांकृत्यायन इन्हें 10वीं शताब्दी का और हजारी प्रसाद द्विवेदी इन्हें 9वीं शताब्दी का मानते हैं)। इनका मुख्य कार्यक्षेत्र गोरखपुर (उत्तर प्रदेश) रहा। इन्होंने सधुक्कड़ी और खड़ी बोली मिश्रित राजस्थानी भाषा का प्रयोग किया, जिससे आम जनता आसानी से इनकी बात समझ सके।

प्रमुख रचनाएँ

डॉ. पीतांबर दत्त बड़थवाल ने गोरखनाथ के नाम से मिलने वाले ग्रंथों की खोज की और उनके द्वारा रचित 14 प्रामाणिक ग्रंथों का संपादन 'गोरखबानी' नाम से किया। उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं:

1. शब्दी (यह सबसे प्रामाणिक और महत्वपूर्ण रचना है)
2. पद
3. प्राण संकली
4. शिष्या दरसन
5. नरवै बोध
6. आत्मबोध

गोरखनाथ का सामाजिक एवं साहित्यिक अवदान

- कबीर व संत काव्य के अग्रदूत:

कबीरदास के दर्शन में दिखने वाली 'उलटबांसियाँ', 'हठयोग', 'इंद्रिय निग्रह' और बाह्य आडंबरों का विरोध सीधे तौर पर गोरखनाथ की परंपरा से ही आया है।

- **सदाचार पर बल:** गोरखनाथ ने सिद्धों की वाममार्गी भोग-विलास पद्धति (पंचमकार) को पूरी तरह प्रतिबंधित कर समाज को नैतिक आचरण, शुद्ध खान-पान और चरित्र की पवित्रता का संदेश दिया।
- **प्रथम गद्य लेखक:** मिश्र बंधुओं ने गोरखनाथ को 'हिन्दी का प्रथम गद्य लेखक' स्वीकार किया है, क्योंकि इनकी रचनाओं में व्यवस्थित हिंदी गद्य के शुरुआती रूप देखने को मिलते हैं।

नाथों के नाम : परंपरा के अनुसार नौ नाथों की संख्या स्वीकृत है, जिनमें प्रमुख नाम इस प्रकार हैं: आदिनाथ (स्वयं शिव), मत्स्येन्द्रनाथ, गोरखनाथ, गाहिणीनाथ, जालंधरनाथ, चौरंगीनाथ, चर्पटनाथ, भर्तृहरिनाथ और गोपीचंदनाथ।

नाथ संप्रदाय की प्रमुख विशेषताएँ :

हठयोग की प्रधानता: नाथों की साधना पद्धति हठयोग पर आधारित है, जहाँ 'ह' का अर्थ सूर्य और 'ठ' का अर्थ चंद्रमा होता है।

आचरण और पवित्रता: इन्होंने बाह्य आडंबरों, जाति-पाति, छुआछूत और वर्णाश्रम का कड़ा विरोध किया तथा मानसिक व शारीरिक पवित्रता पर बल दिया।

गुरु-महिमा: इस साहित्य में गुरु को सर्वोच्च स्थान और ईश्वर तुल्य माना गया है।

नारी के प्रति दृष्टिकोण: इन्होंने गृहस्थ जीवन और स्त्री भोग (कामिनी) का विरोध किया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- 1- हिन्दी साहित्य का इतिहास- आचार्य रामचंद्र शुक्ल
- 2- हिन्दी साहित्य का इतिहास- डॉ नगेन्द्र
- 3- हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास- बच्चन सिंह